ORIGINAL ARTICLE ISSN:- 2231-5063

Golden Research Thoughts

*सारांश*:-

आत्मकथा अधिकाधिक आत्मविवेचन, आत्मनिरीक्षण करने के लिए साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है । मानसिक प्रौढ़ावस्था के मोड़ पर लेखक के परिपक्व संस्कार स्मृति, सत्य व साहस व अभ्यर्थना का सम्बल लेकर आत्माभिव्यक्ति के लिए व्यग्र हो उठते हैं तब कलात्मक आत्मकथा का जन्म होता है। निश्चय ही हिन्दी आत्मकथा के इतिहास में'अन्या से अनन्या' प्रभा खेतान जी का चुनौती मय कदम है जिामें बाह्यजगत से अधिक अन्तर्जगत की कथा है। प्रभा जी ने अन्य की अवधारणा में अनन्य भाव की अनुभूति में अपने जीवन के सैलाब को वाणी देने का प्रयास करके आपसी सम्बन्धों की उभयभाविता का सहज निदर्शन किया है।

बीज शब्दः– प्रभा खेतान,आत्मकथा, सत्यापित इतिहास, अनन्यता, उभयभाविता।

# *सत्यापित इतिहास के आइने में प्रभा खेतान जी के प्रेम की अनन्यता आत्मकथा के विशेष सन्दर्भ में*

*किरण ग्रोवर*

एसो. प्रो. स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
,डी. ए. वी. कॉलेज, अबोहर।.

***प्रस्तावनाः—***

आत्मकथा एक अन्तर्मुखी विधा है,अपने मन के द्वन्द्वों, अनुभवों, संवेदनाओं के सम्प्रेषण के लिए स्रष्टा आत्मकथा का सृजन करता है। आत्मकथा अधिकाधिक मानवीय गुणों से संवलित होने के कारण साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें आत्म प्रकाशन, आत्मसम्प्रेषण, आत्मविवेचन, आत्मनिरीक्षण, आत्मविकास करने के लिए आत्मकथाकार को उपयुक्त श्रम संधान करना पड़ता है। आत्मकथा साहित्य यह अपेक्षा रखता है कि लेखक अपने समस्त गुणों और अवगुणों का सम्यक् निरूपण करें लेकिन यह कार्य दुधारी तलवार पर चलने के समान कठिन व्यवसाय है।[1]

आत्मकथा साहित्य का वह प्रकार है, जिसमें लेखक अपने जिये हुए जीवन का, मुख्य घटनाओं का विवरण सत्य एवं यथार्थ की भूमिका पर आत्मनिरीक्षण एवं परीक्षण करते हुए प्रस्तुत करता है। आत्मकथा का उद्देश्य बाह्योन्मुख होने की अपेक्षा अन्तर्मुख होता है जिस में आत्मनिरीक्षण, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्लेषण की प्रधानता रहती है। इस प्रक्रिया में वह अपने स्वजनों, परिजनों एवं इष्ट मित्रों तक से अलग होता हुआ आत्मकथा लिखता है जिसमें अपनी कथा कहने के साथ साथ अपनों की कथा कहने का अधिकार सहज ही प्राप्त कर लेता है। यही वह ध्रुव जहाँ वह वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर उन्मुख होता है एवं आत्म के दायरे में अपने माता पिता, भाई बहिन, साथी, सगे सम्बन्धी आत्म में निविष्ट हो जाते हैं। अतः इस आत्मीय सम्बन्धों के बीच विचरता आत्मकथाकार एक ओर स्नेह भाजन बनकर एकाकीपन के भार से मुक्त होने लगता है तथा दूसरी ओर परिवार जनों के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक दायित्वों का निर्वाह करता हुआ अपने आप को सम्पूर्ण मानने लगता है।[2]अतः आत्मकथाकारों के जीवन का विशेष अध्ययन कथानायक के जीवन की सफलता का दिग्दर्शन करवाता है तथा वहीं पाठकीय जिज्ञासा का भी शमन करता है।

आत्मकथा लेखक की स्थिति विशिष्ट अन्तर्द्वन्द्व से सम्पूरित होती है। रागात्मकता वृत्ति की अधिकता के कारण भावनाओं का सहज उच्छलन आत्मकथा के प्रणयन का कारण हो सकता है। भावुक व्यक्ति जब अपने अन्तर्मन पर चढ़ते भावनाओं के दबाव से विवश हो जाता है, तब आत्मकथा के रूप में उन भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। भुक्त यथार्थ की अभिव्यंजना में आत्मकथा लेखक की रचना जब सार्वजनिक हो जाती है तो जनसाधारण यह जानना चाहता है कि उसके क्या कारण हैं।[3] आत्मकथा लेखक स्वयं अपने कार्यों का कार्य–कारण सहित ब्यौरा प्रदत्त करता है। जब विगत जीवन के अनुभव और अनुभूतियाँ साहित्य स्रष्टा को इतना उद्वेलित व विवश कर देती हैं कि उन्हें अपने अन्तर्मन के बाहर उड़ेल देने के अतिरिक्त और कोई विकल्प शेष नहीं रह जाता, प्रायः तभी श्रेष्ठ आत्मकथाएँ जन्म लेती हैं।[4] मानसिक प्रौढ़ावस्था के मोड़ पर लेखक के परिपक्व संस्कार स्मृति, सत्य व साहस से अतीत व वर्तमान के मिलन–बिन्दु पर बाहरी प्रेरणा और अभ्यर्थना का सम्बल लेकर आत्माभिव्यक्ति के लिए व्यग्र हो उठते हैं तब कलात्मक आत्मकथा का जन्म होता है।

साहित्यकार स्त्री या पुरुष मानवीय सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में अपना जीवन यापित करते हैं। स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम भाव, काम–भाव का ही परिष्कृत रूप है। मानव के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उसमें व्यक्तिगत रुचियाँ विकसित हुई तब एक विशेष पुरुष व विशेष स्त्री के प्रति अधिक आकर्षण अनुभव करने लगा। सामान्य से विशिष्ट तक ही यात्रा ही काम से प्रेम की यात्रा कही जा सकती है। विश्वसनीयता व यथार्थ–बोध साहित्यकारों की आत्मकथा की विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं।[5] साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में सत्य–प्रतिपादन, यथार्थ चित्रण, तथ्यात्मकता, स्मृति समुज्ज्वलता, वैयक्तिकता, स्वाभाविकता, रोचकता आदि गुणों का अवलम्बन लेकर यथार्थधर्मिता का स्पष्ट अंकन करके नैतिक परम्पराओं को निर्ममता से झुठलाया है और अनैतिकता को महत्त्वान्वित किया है। आत्मकथाओं में तथ्याश्रिता के आधार पर यह स्वीकार किया है कि उनके जीवन में महिलाओं व पुरुषों का कितना योगदान है। हमारे समाज की विडम्बना है कि दाम्पत्यपूर्व व दाम्पत्येतर सम्बन्धों से उलझते तो बहुतायत में लोग हैं, लेकिन स्वीकारने का साहस नहीं करते। आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन–निर्वाह किया है। विवाह से पूर्व साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में प्रेमी–प्रेमिका रूपी भावना के सागर में उद्वेलित होकर यौनाकर्षण में किस सीमा तक 'स्व' को प्रतिबद्ध किया है। साहित्यकारों ने अपने जीवन के रहस्यमय व प्रच्छन्न अनुभव अपनी आत्मकथा में लिखकर पाठकों के सम्मुख विश्लेषणार्थ प्रस्तुत किए हैं। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में उन ज़मीनी सच्चाइयों का विश्लेषण किया है जिससे जीवन में ठहराव व गहराई संस्पर्शित होती है।[6] आत्मकथाकारों ने नारी या पुरूष को अपने जीवन की आवश्यकता, अनिवार्यता के रूप में रूपायित किया है। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में 'स्व' को उद्घाटित करने की आन्तरिक विवशता से आत्मकथा लेखन सम्पन्न किया है तथा अपनी विवशता, आत्मिक छटपटाहट से जुड़ी भावना को संदर्भित भी किया है।[7] आत्मकथाओं में साहित्यकारों के व्यक्तिगत जीवन के पहलू स्वतः खुलते चले जाते है। आत्मकथाकारों ने जीवन के सत्यांकित इतिहास को रूपायित करते हुए अपने मित्र की विलीनता का बेबाकी से अभिव्यंजन किया है। साहित्यकारों की आत्मकथाएँ अनुभव जगत के वसीयतनामे हैं जिनमें वैविध्य एवं एकांतिकता, सांसारिकता और फक्कड़पन जैसी परस्पर विरोधी धाराएँ सम्पूर्ण संवेदनशीलता से मिलती है।

निश्चय ही हिन्दी आत्मकथा के इतिहास में प्रभा खेतान जी ने लोकप्रियता अर्जित की है। भावनाओं के साधम्मर्य में साहित्य–प्रेमियों को प्रभा खेतान जी के लिए पहले ही सहज आकर्षण था। उनके व्यक्तिगत जीवन की उथल–पुथल, उनके विविध आकर्षण, मानसिक संघर्ष, विशिष्ट जीवन–अनुभवों में पाठक का औत्सुक्य विचारणीय बन पड़ा है। पुरुष के प्रति सहज आकर्षण नारी के मन में स्वाभाविक ही होता है। प्रभा खेतान जी ने व्यष्टि–समष्टि के, व्यक्ति–व्यक्ति के सम्बन्धों का विश्लेषण किया है एवम् अपने जीवन का तूफ़ान, तूफ़ान का सैलाब, भावनाओं की सघनता, तनावों का कसाव आदि को वाणी देने का सातत्य प्रयास किया है व डाक्टर साहब के साथ अपने सम्बन्धों को निःसंगता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रभा खेतान जी उन लेखकों में परिगणित की जाती है जिन्होंने भोगे हुए क्षणों को समाज के समक्ष बेबाकी से प्रस्तुत करने का साहस दिखाया। यह आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' बाह्यजगत से अधिक प्रभा खेतान जी के अन्तर्जगत की कथा है जहाँ–2 लेखिका के अन्तरंग जीवन के दर्शन होते है; वे पर्याप्त प्रभावशाली हैं। इन्होंने लघुताग्रंथि की ऊँची नीची लहरों में से गुज़रते हुए जिस संघर्ष का सामना किया, उसकी प्रतिक्रिया को कुशलता से अभिव्यक्त किया हैं।

आत्मकथा के क्षेत्र में प्रभा खेतान जी का योगदान साहसपूर्ण व चुनौती मय कदम है जो आत्मकथा लेखन की कसौटी है। इन्होंने परिवार में अपने प्रति अन्य भाव को अपनी अम्मा के उपेक्षित व्यवहार के माध्यम से विवेचित किया है –''कैसा अनाथ बचपन था अम्मा ने मुझे कभी गोद में लेकर चूमा ही नहीं। मैं चुपचाप उनके दरवाज़े पर खड़ी रहती ..... शायद अपनी रजाई में सुला ले..... अम्मा मेरी बस।''[8]

बचपन में अपनी ज़िन्दगी के अकेलेपन से पाठकों को रूबरू करवाते हुए प्रभा खेतान जी ने एकालाप की स्थिति

में चिड़िया से संवाद संलापने का वातावरण संस्थापित किया है–'' अलो अले गोरैया बता दूं आज कहां कहां होकर आई, औले उस कौवे को देखकर क्यों डल गई थी, कुछ खाया तूने, क्या खाती है त ू? ।'[9]

1962 के भारत चीन आक्रमण के समय अपने मानस को पूरी तरह प्रभा खेतान जी ने देश के प्रति समर्पित किया एवम् तमाम अपने सोने के गहनों को देश की जरूरत समझ कर दान कर दिया। इस कार्य में अपनी अम्मा के उपेक्षित व्यवहार में परिवर्तनशीलता का आभास पाया एवम् इस अवस्थिति को प्रभा जी ने इस प्रकार वर्णित किया है–'' अपनी खुली आंखों से मुझे देर तक घूरती रही। बेटी की देश भक्ति पर उन्हें भी नाज़ हुआ, सबको फोन पर मेरे कारनामे सुनाती रहती थी।''[10]

ज़िन्दगी की त्रासदी का विश्लेषण करते हुए प्रभा खेतान जी ने अम्मा का क्रोध, भाई बहनों का तूफ़ानी वार्तालाप, आदि का वर्णन करते हुए परिवार के उपेक्षा भाव का रूपांकन किया है–''मैं उपेक्षिता थी, आत्म सम्मान की कमी ने ज़िन्दगी भर पीछा किया, मां ने प्यार नहीं किया क्योंकि मैं ठहरी काली मां की तरह गोरी नहीं और गीता की तरह स्मार्ट नहीं,लेकिन पढ़ने में अच्छी थी क्या यह काफ़ी नहीं ''[11]

साहित्य की दुनिया में जिनके कदमों की छाप पर प्रभा खेतान जी ने चलना चाहा, अपनी ज़िन्दगी के अकेलेपन को भरने की कोशिश की वे थी उनके स्कूल की शिक्षिका मन्नू भंडारी थी जिन्होंने 4 से लेकर 11वीं कक्षा तक पढ़ाया। उनके जीवन की दास्तान सुनकर प्रभा खेतान को बहुत गुस्सा आया इस अवस्थिति का उन्होंने स्पष्ट विवरण दिया है–''एक दिन मन्नू जी ने रोते रोते पति परमेश्वर के किस्से सुनाये । ऐसे दग़ाबाज़ आदमी पर मुझे बहुत गुस्सा आया था। अपनी मां जैसी शिक्षिका को मैंने पहली बार रोते हुए देखा था ।''[12]

प्रभा खेतान जी हिन्दी साहित्य में नक्षत्र के रूप में जाज्वल्यमान हैं जिनमें विशाल जीवन अनुभव, वैश्विक दृष्टिकोण, विदूषी का व्यक्तित्व विद्यमान है। प्रभा खेतान जी को मार्क्स दर्शन अत्यधिक प्रिय था । उन्होने कांट, हीगल, ब्रैडले आदि सभी दार्शनिकों को पढ़ डाला । दर्शन की सबसे बड़ी व्याधि है कि यह विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है जिससे ज़िन्दगी का समग्र दृष्टिकोण विकसित होता है। भारतीय दर्शन के प्रति प्रभा खेतान जी ने अपना मन्तव्य स्पष्ट किया है–'' भारतीय दर्शन को जरूर पढ़ो, बार बार पढ़ो अपने आप ही पर्त दर पर्त खुलती चली जाएगी। तुम्हारे अन्दर तीन बातों का होना बहुत जरूरी है–अमीरसा, जिज्ञासा, संकल्प और फिर दोहराते रहने का अभ्यास'।''[13]

अपने जीवन के द्वित्व को व्यक्तिगत जिजीवषा का जामा पहना कर उसकी निरपेक्षता पर विचार करते हुए दार्शनिकता की संकल्पनात्मक अनुभूति की है–'' प्रेम और घृणा, स्वतंत्रता और गुलामी, झूठ और सच, जीवन और मृत्यु कुछ ऐसे स्थायी द्वित्व हैं जिनके बीच कोई स्पेस नहीं, इसी द्वित्व में से एक का चुनाव करना होगा इसे हम व्यक्तिगत जिजीवषा कहें निरपेक्ष कुछ नहीं सब कुछ सापेक्ष है पर यह द्वित्व –अपने आप में क्या यह द्वित्व भी निरपेक्ष नहीं हो सकता।''[14]

भोगे हुए जीवन की अनुभूतिपरक तीव्रता, संचित स्मृतियाँ, वेदना, संवेदना, हर्ष, संघर्ष आदि का सत्यापित स्वरूप प्रभा खेतान जी ने निरूपित किया है। प्रभा जी आंखों का इलाज कराने एक रोगी के रूप में डाक्टर साहब से मिली । डाक्टर साहब ने प्रभा जी की सुन्दर आंखों की प्रशंसा करके उन्हें अपनी बांहों में समेट कर सुरक्षा के भाव से भावित किया। चुनौती की प्रतिक्रिया में डाक्टर साहब का प्रगाढ़ आलिंगन प्रभा जी को समेटता चला गया। प्रभा खेतान जी ने डाक्टर साहब के शब्दों में प्रेम की अनन्यता का प्रतिपादन किया है–'' तुम मुझ पर छा गई हो आज तक मैंने किसी स्त्री को इतना नहीं चाहा जितना कि तुम्हें''[15]

चुनाव, प्रतिबद्धता जैसे शब्द प्रभा खेतान जी के साहित्य में दार्शनिक होने के नाते विस्तारित हुए या उन्होंने संस्कारों के रूप में अधिगृहित किया। इन शब्दों की व्यावहारिकता पर चिन्तन प्रसूत निष्कर्ष प्रतिपादित किया है–'' सात फेरों के बिना भी तुम मेरे हो। प्यार हदय से नहीं किया जाता। हदय से यदि हम कुछ करते हैं तो ज़्यादा सोचने समझने की ज़रूरत नहीं।''[16]

यौन कुण्ठाहीनता के परिपार्श्व में' स्व' को पूर्ण वृत्तियों के साथ अंकित करने में सक्षमता का परिचय दिया है। प्रभा खेतान जी ने भावनाओं की सघनता में पुरुष की काम भावना को दैहिक स्तर पर आनन्दानुभूतियों में शृंखलाबद्ध किया है–''मैंने उन्हें अपनी बाँहों में खींच लिया था.....वे रो पड़े थे मेरी बाँहों में..... चुप हो जाइए आपको मेरी कसम,..... हम दोनों एक दूसरे के हो चुके हैं।''[17]

प्रभा खेतान जी ने लम्हों के धागे से 'स्व' को सूत्रबद्ध करते हुए प्रेमी के प्रति समर्पण की भावना के बावजूद परायेपन से आहत होने पर भावी जीवन की बेबसी व आकुलता को विवेचित किया है–''लुका छिपी का यह खेल मुझसे बर्दाश्त नहीं होता .....दिन के उजाले में आप मुझे साथ रखिए ,अपने जीवन में स्थान दीजिए।''[18]

प्रेम के असामाजिक सम्बन्धों की निर्ममता से बेखौफ़ होकर भविष्य की चिन्ता से बेख़बर हो कर पॉच बच्चों के पिता के प्रति 'स्व' की यौन तुष्टि का प्रभा खेतान जी ने सत्यापित इतिहास रेखांकित किया है–''मुझे समाज की चिन्ता नहीं. .....क्षण भर को वे, बस क्षणांश को वे रुके ,मेरी नंगी देह पर हाथ फिराते हुए उन्होंने कहा–'तुम कितनी कमसिन हो प्रभा।''[19]

वास्तव में प्रेम काम भावना का ही परिष्कृत रुप स्वीकारा गया है। प्रभा खेतान जी ने प्रेम की अपरिहार्यता पर प्रकाश डालते हुए दमित आकांक्षाओं को अतिरंजना पूर्ण शैली में विस्तारित किया है–''जो कुछ भी घट रहा है,वह हमारा चुनाव है।..... हमारा सम्बन्ध साधारण है। हमारे मिलने का कारण केवल देह नहीं है–पर हम देह से अलग भी तो नहीं हो पा रहे।''[20] उनके व्यक्तित्व, जीवन की उथल–पुथल, मानसिक संघर्ष, विशिष्ट जीवन के अनुभव पाठकों में औत्सुक्य जागृत करते हैं। डाक्टर साहब के आकर्षण से अपने जीवन में परिपक्वता का जो दीप प्रभा खेतान जी ने प्रज्वलित किया, उसकी लौ उन्हें भ्रम, भय, संशय से विकम्पित करती रही। दाम्पत्य पूर्व सम्बन्धों की भावभूमि का विश्लेषण करते हुए जीवन में प्रेम के असामाजिक सम्बन्धों को स्वछन्दता के साथ प्रभा खेतान जी ने स्वीकार किया है व तटस्थ होकर जीवन को यथार्थ बोध के धरातल पर रूपायित किया है–''वह बाल बच्चों वाले व्यक्ति थे। पिछले बीस वर्षों से मैं उनके साथ थी मगर किस रूप में..... इस रिश्ते को नाम नहीं दे पाऊँगी। भला प्रेमिका की भूमिका भी कोई भूमिका हुई।''[21]

प्रभा खेतान जी ने आपसी सम्बन्धों की उभयभाविता का भी सहज निदर्शन किया है। अन्य की अवधारणा में अनन्य भाव को अनुभूत करके वास्तविक धरातल पर आत्मसंश्लेषण किया है–''परिवार की तमाम असफलता की जड़ हूँ,

यदि नहीं होती तो घर में अमन चैन र हता।..... भरसक चेष्टा करती डॉक्टर साहब का परिवार सुखी रहे।'[22]

विवाहित पुरुष के साथ अपने सम्बन्धों की बेबाकी से स्वीकारोक्ति प्रभा खेतान जी ने विश्लेषित की है तथा आत्मविश्लेषण के अन्तर्गत जीवन में घटित घटनाओं का सविस्तार अभिव्यंजन किया है–''मैं विवाहित होकर किसी से अफ़ेयर चलाये रखती कुछ दिनों तक ..... तब भी ठीक था।..... मगर अविवाहित रहकर एक विवाहित पुरुष ,पाँच बच्चों के पिता के साथ टंगे रहना ,भला यह भी कोई बात हुई ? ।''[23]

इन्होंने आत्मचिन्तन करते हुए सम्बन्धों की मानसिकता में अनुकूलता का आभास पाया है। स्त्री व्यक्तित्व के अनुद्घाटित आयामों को खोलते हुए घर की लालसा, निर्बन्ध उत्तरदायित्वहीनता, रचनात्मक ऊर्जा का नवीनीकरण के सन्दर्भ में प्रभा खेतान जी ने अपनी विचारधारा का सम्यक् निरुपण किया है। प्रभा खेतान जी ने डॉक्टर साहब के समक्ष देह समर्पण की छिछली मानसिकता को डॉक्टर साहब के शब्दों में समाकलित किया है–''मैं चाहता हूँ कि तुम इससे निकल जाओ, मेरी ओर देखते हुए उन्होंने फिर कहा –छिछली भावुकता में कुछ नहीं रखा.....इसके लिए ताउम्र तुम कुँआरी तो नहीं बैठी रहोगी ।'[24]

डाक्टर साहब की अपने प्रति सन्देहग्रस्तता व रिश्तों की कैफ़ियत पर पुरूष की मानसिकता का प्रभा जी ने विश्लेषण किया है–''और छोड़ो ये जुमले –तुम इस हद तक गिरी हुई हो, मैं सोच भी नहीं सकता था। कहो, कितने यार हैं तुम्हारे और कितने चक्कर लगाओगी तुम।'[25]

डाक्टर साहब की छवि में पुरूष मानसिकता का प्रतिबिम्ब रूपायित हो रहा था। डाक्टर साहब को प्रभा जी के नाम के साथ लगा मिस शब्द कचोटता रहता था इसीलिए उन्होंने प्रभा जी को डॉक्टरेट करने की सलाह दी। इस विचार की अभिव्यक्ति प्रभा जी ने की है–'' लोग तुम्हें डॉ प्रभा खेतान के नाम से जानेंगें मिस प्रभा खेतान का परिचय असल में लोगों को तुम्हारी निजी ज़िन्दगी में झांकने का अवसर देता है।'[26]

प्रभा खेतान जी चमकती हुई दोपहर में न्यूयार्क शहर में सुबक रही थी। स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर, संघर्षशील महिला होने के नाते स्वेच्छा से प्रभा जी ने अकेलेपन वाले जीवन का वरण किया। न्यूयार्क शहर में डाक्टर साहब प्रभा जी को छोड़ कर जा चुके थे।प्रभा जी ने अपने को डांट फटकार कर अन्तर्मन से प्रश्न किया कि –''भला 250 सौ डालर की बर्बादी को कैसे सहन किया जा सकता था।'[27]

प्रभा जी निषेध की धूल के साथ उड़ रही थी। उनके जीवन पर गुप्त जी की पंक्तियां –अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी' चरितार्थ हो रही थी। चुनाव, निर्णय की स्वतंत्रता, प्रतिबद्धता जैसे शब्दों को आज तक सुनती रही। डाक्टर साहब की सैक्रेटरी बनने पर भी स्त्री की नियति पर विचार विमर्श करती रही। अन्तर्मन्थन करने पर प्रभा जी अपनी विचार धारा का विश्लेषण किया है–''नहीं मेरी लड़ाई अपने ही समाज से चलेगी। आप नहीं जानती बहन जी औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।''[28]

अमेरिका में आइलिन के यहां जब प्रभा जी ने आश्रय पाया तो आइलिन ने उनके भावी जीवन के बारे में अपना वक्तव्य प्रकट किया कि–'' एक अविवाहित लड़की को विवाहित पुरूष से दूर रहना चाहिए। समाज तुम्हें दूसरी औरत के रूप में कटघरे में खड़ाकर चाबुक लगायेगा। सारी जिन्दगी भर रोती रह जाओगी। मैं आइलिन का बातों को समझ कर भी नहीं समझ पा रही थी।''[29]

प्रभा जी ने अपने जीवन की वास्तविकता से पाठकों को परिचित करवाया है। अपराध बोध से ग्रसित होने के बाद प्रभा जी ने अन्तर्मन्थन करते हुए पाठकों से अपने दुख को सांझा किया है–'' बिना शादी के तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं, तुम्हारी पढ़ाई लिखाई, तुम्हारा व्यापार, तुम्हारी साहित्यिक कृतियां। तुम कुछ नहीं, नहीं मैं कुछ नहीं ,मेरी कोई पहचान नहीं,जहां जाती हूं, वहीं तो सुनना पड़ता है। आपकी शादी किससे हुई है।''[30]

प्रभा जी की आत्मकथा अनुभव जगत का वसीयतनामा है जिसमें वैविध्य एवं एकांतिकता, सांसारिकता और फक्कड़पन जैसी परस्पर विरोधी धाराएँ सम्पूर्ण संवेदनशीलता से प्रकट हुई है। निश्चय ही हिन्दी आत्मकथा के इतिहास में प्रभा जी ने लोकप्रियता अर्जित की है। उनके व्यक्तिगत जीवन की उथल–पुथल, उनके विविध आकर्षण, मानसिक संघर्ष, विशिष्ट जीवन–अनुभवों में पाठक का औत्सुक्य विचारणीय बन पड़ा है। पुरुष के प्रति सहज आकर्षण नारी के मन में स्वाभाविक ही होता है। प्रभा जी ने अपने जीवन का तूफ़ान, तूफ़ान का सैलाब, भावनाओं की सघनता, तनावों का कसाव आदि को वाणी देने का सातत्य प्रयास किया है व डाक्टर साहब के साथ अपने सम्बन्धों को निःसंगता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रभा जी ने डाक्टर साहब के सम्पर्क से अनुभवों को समाविष्ट करके अपने मन पर पड़े हुए प्रभावों को सहज विश्लेषित किया है। जीवन के इतिवृत्त प्रस्तुत कर के अनुभूति व अभिव्यक्ति के धरातल पर साफगोई के प्रतिमान प्रस्तुत किए तथा सृजनशील व्यक्तित्व में यौन भावना की महत्त्वपूर्ण हिस्सेदारी स्वीकार की है। निश्चय ही हिन्दी आत्मकथा के इतिहास में प्रभा खेतान जी ने स्व को नामांकित किया है।

1 कमलेश सिंहः हिन्दी आत्मकथा : स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989, पृ. 5।
2 शान्तिखन्नाः आधुनिक हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य, सन्मार्ग प्रकाशन,दिल्ली, 1973, पृ.18
3 विनीता अग्रवालः हिन्दी आत्मकथाएँ : सिद्धान्त एवं स्वरूप विश्लेषण, सचिन प्रकाशन, 1989, पृ. पृ. 19।
4 नारायण विष्णु शर्माः हिन्दी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978
5 विश्व बन्धुः हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली,1989 पृ. 27
6 उर्मिला भटनागरः हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य चित्रण, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली, 1981
7 विश्व बन्धुः हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली,1989 पृ. 27
8 प्रभा खेतानः अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2007 पृ.,31
9 वही, पृ. 30
10 वही, पृ.,49
11 वही, पृ. 15
12 वही, पृ. 31
13 वही, पृ. 62
14 वही, पृ. 15

15 वही, पृ. 9
16 वही, पृ. 139
17 वही, पृ. 138
18 वही, पृ. 140
19 वही, पृ. 139
20 वही, पृ. 136
21 वही, पृ. 134
22 वही, पृ. 141
23 वही, पृ. 135
24 वही, पृ. 137
25 वही, पृ. 164
26 वही, पृ. 164
27 वही, पृ. 8
28 वही, पृ. 131
29 वही, पृ. 142
30 वही, पृ. 13